International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 01-03

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 01-03
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-01-2017
Accepted: 03-02-2017

डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हि.प्र.विश्वविद्यालय, समरहिल
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. लता देवी
सहायक आचार्य, संस्कृत–विभाग,
हि.प्र.विश्वविद्यालय, समरहिल
शिमला, हिमाचल प्रदेश, भारत

पुराणों में महाभारतकालीन नदियाँ एवं तीर्थ

डॉ. लता देवी

सारांश
पुराणों का सम्बन्ध प्राचीन साहित्य से है महाभारत में इसी के भाव को व्यक्त किया गया है। आदिकाल से ही मनुष्य की सांसारिक सन्तापों, रोग, शोकादि एवं मानसिक दुःखों से छुटकारा पाने की प्रवृत्ति रही है। इसके लिए उसने अनेक प्रकार के उपायों का अन्वेषण करने का प्रयास किया। उनमें से नदी–पूजन तथा तीर्थ यात्रा की मान्यता एक लोकप्रिय दुःख निवारक उपाय है। भारत का अभिषेक करती हुई अनेक नदियाँ पर्वत–शिखरों के आँचलों से गिर कर मैदानों की ओर सदैव बहती रहती है। पुराणों में महाभारतकालीन नदियों एवं तीर्थों का वर्णन किया गया है।

मूल शब्दः महाभारतकालीन नदियाँ, सांसारिक सन्तापा, दुःखों, छुटकारा

प्रस्तावना
पुराणों का सम्बन्ध प्राचीन साहित्य से है जो भारतीय धर्म एवं संस्कृति के प्रतीक हैं। वेदों के गम्भीर रहस्यों को लौकिक बोधगम्य भाषा के द्वारा जनमानस तक पहुँचाना पुराणों का लक्ष्य रहा है। महाभारत में इसी भाव को व्यक्त किया गया है– पुराणपूर्णचन्द्रेण श्रुति ज्योत्सना प्रकाशिता। अर्थात् पुराण रूपी चन्द्रमा द्वारा श्रुति रूपी ज्योत्सना छिटकती है। ये वेदों के अर्थ को विस्तार से प्रकाशित करते हैं। नारदीयपुराण में पुराण तथा वेद के पारस्परिक सम्बन्ध की गम्भीर विवेचना की गई है जिस प्रकार आश्चर्यमय जगत् पुरातन पुरूष परमेश्वर से उत्पन्न है उसी प्रकार समस्त वाङ्मय पुराणों से उत्पन्न है–

पुराणपुरूषाज्जातं यथेदं जगदद्भुतम्।
तथेदं वाङ्मय सर्वपुराणेभ्यो न संशयः।।

आदिकाल से ही मनुष्य की सांसारिक सन्तापों, रोग, शोकादि एवं मानसिक दुःखों से छुटकारा पाने की प्रवृत्ति रही है। इसके लिए उसने अनेक प्रकार के उपायों का अन्वेषण करने का प्रयास किया। उनमें से नदी–पूजन तथा तीर्थ यात्रा की मान्यता एक लोकप्रिय दुःख निवारक उपाय है। भारत का अभिषेक करती हुई अनेक नदियाँ पर्वत–शिखरों के आँचलों से गिर कर मैदानों की ओर सदैव बहती रहती हैं। बहता जल स्वच्छता एवं पवित्रता का प्रतिक माना गया है। नदियों की अमृतमयी धाराएं समस्त मलिनताओं को धोते हुए सबको जीवन प्रदान करती है। ये किसी भी राष्ट्र की प्राणदायिनी शक्तियाँ होती हैं। इसी कारण मानव सभ्यता ने नदी–तटों को अपना निवास स्थान बनाया। इसी कारण इनके तटों पर तीर्थ स्थापित हुए। सर्वप्रथम नदी तथा तीर्थ शब्द का अर्थ स्पष्ट किया जा रहा है।

नदी शब्द का अर्थ
वैदिक कोश[1] के अनुसार नदी शब्द सर्वप्रथम ऋग्वेद में आया है। नदी सूक्त में देवी के रूप में उनकी स्तुति की गई है। उनका पर्वतों से भी घनिष्ठ सम्बन्ध बताया गया है। यास्क निरूक्त में नदी की व्युत्पत्ति 'णद्' अव्यक्ते शब्दे इस धातु से घञ् प्रत्यय करके नद और स्त्रीलिंग में ङीप् के साथ बताई है। 'नदना इमा भवन्ति शब्दवत्यः' अर्थात् ये नाद या अव्यक्त शब्द करने वाली होती है।[2] अथर्ववेद में पत्थरों के बीच वेग से बहती हुई नदियों का वर्णन है– सखायोऽश्मन्वती नदी स्यन्दत इयम्।[3] इन्द्र के द्वारा वृत्रासुर को मारे जाने पर इक्कट्ठे बहते हुए जल ने जगत् विख्यात नाद किया इसलिए वे जल 'नदी' के नाम से पूकारे जाने लगे–

यददः सप्रयतीरहावनदता हते।
तस्मादा नद्यो नामस्य तावो नामानि सिन्धव।।[4]

संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के अनुसार नदी शब्द स्त्रीलिंग में √नद+अच्+ङीप से बनता है। जिसका अर्थ जलधारा है।[5] जल की वह बड़ी धारा जो किसी पहाड़ या झील से निकलकर विशिष्ट मार्ग से बहती हुई समुद्र में मिलती है उसे नदी कहते हैं।

तीर्थ शब्द का अर्थ

वैदिक कोश[6] के अनुसार 'तीर्थ' शब्द ऋग्वेद काल से ही नदी तट के समीपस्य क्षेत्र या किसी जल या समुद्र के तटीय स्थान के अर्थ में आया है। वैदिक मन्त्रों में आए 'तीर्थ' शब्द से आध्यात्मिक शुद्धि के स्थान का आभास मिलता है। 'तीर्थ' शब्द का शाब्दिक अर्थ है नदी में उतरने के लिए बनी सीढियाँ या घाट। भारतीय परम्परानुसार विश्वास किया जाता है कि तीर्थ भवसागर को पार करने का माध्यम है। वहाँ जाकर स्नान कर दान–पुण्य और साधु–सन्तों का सत्संग करने से मोक्ष मिलता है मुख्य तीर्थों में सात पुरियां, चार धाम और भारत के असंख्य पवित्र स्थान है। इसके अतिरिक्त गुरू को भी तीर्थ कहते हैं। भगवान् का चरणोदक भी तीर्थ कहलाता है।[7]

महाभारतकालीन नदियाँ एवं तीर्थ

महाभारत के वन पर्व के अध्याय अस्सी से एक सौ छप्पन्न तक 'तीर्थ यात्रा' नामक अवान्तर पर्व है। इसमें भारत देश की सम्पूर्ण नदियों और उनके तट पर स्थित तीर्थ–स्थलों की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन है। उस समय नदियों के निवास स्थान, नदियों के लुप्त होने के स्थान, पुनः प्रकट होने के स्थान नदी–संगम, नदी–तट तीर्थ कहे गए हैं। इस प्रकार सब देवताओं के तीर्थ मान्य हुए। जैसे त्रित में कुएं में गिरने का प्रसंग ऋग्वेद में आता है–

त्रितः कूपेऽवहितो देवान्हवत अतवे।
तच्छुश्राव वृहस्पति कृण्वन्न हूरणदुरूवित में अस्य रोदसी।।[8]

कूप में पड़े गौतम पुत्र त्रित ने यज्ञ द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए देवों से प्रार्थना की। वृहस्पति ने सुनी और उसका उद्धार किया। उसी से सम्बन्धित उदपान तीर्थ महाभारत में सरस्वती नदी तट पर बना है जो एक कुआ है।[9] बलराम उस तीर्थ पर गए और उसका दर्शन कर पुनः–पुनः स्तुति करते हुए वहाँ से विनशन तीर्थ गए जहाँ सरस्वती लुप्त हुई है–

तस्मानदीगतं चापि उदपानं यशस्विनः।
त्रितस्य च महाराज जगमाथ हलायुधः।।
उदपानं च तं दृष्टवा प्रशंस्य च पुनः।
नदीगतमदीनात्मा प्राप्तो विनशनं तदा।।[10]

सरस्वती तट पर ही उसने महाशंख नामक वृक्ष देखा। जिसके आस–पास व्रत नियमों का पालन करते हुए यक्ष, विद्याधर, राक्षस, पिशाच तथा सिद्धगण निवास करते हुए उसके फलों को खाकर सन्तुष्ट होते। लोक विख्यात वह वृक्ष पवित्र तीर्थ था अतः बलराम ने वहाँ दान किया।[11] पुष्कर में यज्ञ करते हुए ब्रह्मा ने सरस्वती देवी की आराधना कर आह्वान किया जिससे नदी वहाँ 'सुप्रभा' नाम से प्रकट हुई।[12] नैमिषारण्य में मुनियों के समक्ष यज्ञ के निमित्त आयी हुई यह श्रेष्ठ नदी 'कञ्चनाक्षी' के नाम से सम्मानित हुई। राजा गाय द्वारा आहुत सरस्वती 'विशाला' कही जाती थी।[13] उद्दालक मुनि द्वारा कोसल प्रान्त में यज्ञ करते हुए आहुत 'मनोरमा' कहलाई। कुरूक्षेत्र में राजा कुरू के यज्ञ में आयी सरस्वती 'सुरेणु' और हरिद्वार में यज्ञ करते हुए दक्ष प्रजापति द्वारा स्मरण करने पर भी 'सुरेणु' ही कही गई है। वसिष्ठ द्वारा कुरूक्षेत्र में आहुत दिव्य सलिल सरस्वती ओघवती नाम से प्रसिद्ध हुई। ब्रह्मा के यज्ञ में भगवती 'विमलोदका' नाम से प्रसिद्ध हुई।[14] सप्तसारस्वत् तीर्थ में ये सातों नदियाँ एकत्र होकर आयी–

एकीभूतास्ततस्तास्तु तस्मिंस्तीर्थे समागताः।
सप्तसारस्वतं तीर्थं ततस्तु प्रथितं भुवि।।[15]

इसे सोम तीर्थ भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ चन्द्रमा ने राजसूय यज्ञ किया था और सारस्वत मुनि ने उत्तम ब्राह्मणों को वेदाध्ययन करवाया।[16] ''सरस्वती का उत्पत्ति स्थल प्लक्षप्रस्रवण नाम तीर्थ है–

पुण्यतीर्थवरं दृष्टवा विस्मयं परमं गतः।
प्रभावं च सरस्वत्याः प्लक्षप्रस्रवणं बलः।।[17]

सरस्वती नदी तट पर औशनस, कपाल, मोचन, पृथुदक, कुरूक्षेत्र आदि असंख्य पवित्र तीर्थ हैं। ये भी मान्यता है कि पृथूदक में जप करने से मृत्यु का भय नहीं होता।[18] कुरूक्षेत्र को ब्रह्मा की उत्तरवेदी कहा है। तरन्तुक, अरन्तुक, रामह्रद तथा मंचक्रुक के बीच का भू–भाग समन्तपञ्चक एवं कुरूक्षेत्र कहा है–

तरन्तुकारन्तु कयोर्यदन्तरं रामह्रदानांचमचंक्रु कस्य च।
एतत् कुरूक्षेत्र समन्तपञ्चकं प्रजापतिरूतरवे दिरूच्यते।।[19]

यह महाभारत युद्ध की क्रीड़ा–स्थली है, जिसमें मृत्यु होने पर स्वर्ग प्राप्ति निश्चित की होती है। कुरूक्षेत्र के सम्बन्ध में कहा जाता है कि यहाँ से उड़ी धूलि भी यदि शरीर पर पड़ जाए तो वह पापी मनुष्य को परमपद की प्राप्ति करवा देती है–

पांसवोऽपि कुरूक्षेत्राद् वायुना समुदीरिताः।
अपि दुष्कृतकर्माणं नयन्ति परमां गतिम्।।[20]

ऋषिकुल्या नदी एक पवित्र नदी है। मनुष्य इसमें स्नान कर पापरहित होकर देवता और पितरों का पूजन करके ऋषि लोक को प्राप्त करता है–

ऋषि कुल्या समासाद्य नरः स्नात्वा विकल्मषः।
देवान् पितृन् चार्चयित्वा ऋषिलोकं प्रपद्यते।।[21]

कृष्णावेणा दक्षिण भारत की आधुनिक पुण्य सलिला कृष्णा नदी है इससे अग्नि की उत्पत्ति बताई गई है। यह सदा पवित्र एवं मन्द प्रवाह वाली है–

सदा निरामयां कृष्णा मन्दगां मन्दवाहिनीम्।[22]

कौशिकी नदी तट पर विश्वामित्र ने तपस्या की–

विश्वामित्रसुतां ब्रह्मन् न्यायभूतां भरस्व वै।
कामक्रोधावविजवान सखा ते कौशिकी गाः।।[23]

गण्डकी नदी को नारायणी और शालग्रामी कहा गया है। गोदावरी नदी की उत्पत्ति ब्रह्मगिरि से मानी गई है। युधिष्ठिर ने तीर्थ यात्रा करते हुए इस नदी का दर्शन किया था। यह बहुत से जल युक्त और तापसों से सेवित थी–

यस्याभाख्यायेत पुण्या दिशि गोदावरी नदी।
वहवारामा वहुजला तपसाचारिता शिवा।। [24]

इसमें पितरों के निमित्त श्राद्ध, तर्पण और पिण्डदान आदि कार्य किए जाते थे–

तत्रापि चाप्लुत्य महानुभाव संतर्पयामास पितृन सुरान च।
द्विजातिमुख्येषु धनं विसृज्य गोदावरीं सागरमगच्छत्।।[25]

गोमती गंगा की सात धाराओं में से एक मानी गई है–

गंगा च यमुना चैव प्लक्षजातां सरस्वतीम।
रथस्यां सरयूँ चैव गोमतीं गण्डकीं तथा।।
अपर्युषित पापास्ते नदीः सप्त पिवन्ति ये।
इयं भूत्वा चैकवप्रा शुचिराकाश्गाः पुः।।[26]

इस पवित्र नदी के तट ×यम्बकं पर महादेव का स्थान भी रहा है–

गोमतीं धूतपापा च चन्दनाञ्च महानदीम्।
अस्यास्तीरे महादेव स्×यम्बकमूर्त्या विराजते।।[27]

चर्मण्वती अरावली की पहाड़ी से निकलकर यमुना में गिरती है इस नदी के तट पर सहदेव न जम्भक पुत्र को हराया–

ततश्चर्मण्वती कूले जम्भकस्यात्मजं नृपम्।
ददर्श वायुदेवेन शोणितं पूर्व वैरिणा।।[28]

पुण्य कर्म के अनुष्ठान से शुद्ध हुए व्यक्ति के हृदय में सब तीर्थ वास करते हैं। गुरू से परमात्मा का ज्ञान मिलता है अतः वह सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है–

गुरू तीर्थ परं ज्ञानमतस्तीर्थं न विद्यते।
ज्ञानतीर्थं परं तीर्थं ब्रह्मतीर्थं सनातम्।। [29]

तीर्थ स्नान की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि केवल शरीर को जल में भिगो लेना ही स्नान नहीं है। सच्चा स्नान तो वही करता है जो मन इन्द्रिय संयम के जल में गोता लगाता है–

नोदकक्लिन्नगात्रस्तु स्नात इत्यमिधीयते।
स स्नातो यो दमस्नातः स बाह्याभ्यन्तर शुचिः।।[30]

इस प्रकार पृथ्वी पर और मन में अनेक पुण्यमय तीर्थ हैं जो इन दोनों प्रकार के तीर्थों में स्नान करता है, वह शीघ्र ही परमात्मा प्राप्ति रूप सिद्धि को प्राप्त कर लेता है–

मनश्च पृथिव्याश्च पुण्यास्तीर्थस्तथापरे।
उभयोरेव चः स्नायात् स सिद्धिं शीघ्रमाप्नुयात।।[31]

जैसे क्रियाहीन बल या बल रहित क्रिया संसार में कार्य को साधन नहीं कर सकती, दोनों के संयुक्त होने पर ही कार्य सिद्धि होती है। इसी प्रकार शरीर शुद्धि और तीर्थ शुद्धि से युक्त पुरूष ही मोक्ष को प्राप्त करता है। अतः दोनों प्रकार की शुद्धि उत्तम है –

यथा बलं क्रियाहीनं क्रिया वा बलवर्जिता।
नेह साधयते कार्य समायुक्ता तु सिध्यति।।
एवं शरीर शौचेन तीर्थशौचेन चान्वितः।
शुचिः सिद्धिमवाप्नोति द्विविधं शौचमुत्तमम्।।[32]

नदियाँ और तीर्थ मानव के आध्यात्मिक प्रेरक हैं इनके माध्यम से मनोबल तथा आध्यात्मिक ज्ञान में वृद्धि होती है तथा मानव सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर मोक्ष की ओर अग्रसर होता है।

निष्कर्ष

मनुष्य से जाने अनजाने में कोई पाप हो जाता है अतः उससे छुटकारा पाने के लिए पुराणों में विभिन्न मार्ग बताए गए हैं। उनमें से एक उपाय नदी तीर्थों पर की गई तपस्या, दान, स्नानादि है। नदी तीर्थों का आश्रय लेकर स्नान–दान, जप–तप, पूजा–पाठ करना एक ऐसा उपाय है जिससे मानव पाप कर्मों से मुक्ति पा सकता है। महाभारत काल में भी नदियों का देवी महत्त्व बना रहा। तीर्थों से पुण्य प्राप्त करने के लिए उच्च नैतिक और आध्यात्मिक गुणों पर बल दिया गया। तीर्थों से वही पुण्य प्राप्त कर सकते हैं जो कपटाचरण से दूर हैं, अहंकार रहित हैं, जितेन्द्रिय हैं और सन्तुष्ट हैं–

परिग्रहादुपावृतः सन्तुष्टो येन केनचित्।
अहंकार निवृत्तश्च स तीर्थफलमश्नुते।।

तीर्थ स्नान की महत्ता को स्पष्ट करते हुए कहा है कि केवल शरीर को भिगो लेना स्नान नहीं है। सच्चा स्नान तो केवल वही है जो मन, इन्द्रिय संयम के जल में गोता लगाता है–

नोदकक्लिन्नगात्रस्तु स्नातः इत्यभिधीयते।
स स्नातो यो दमस्नातः स बाह्याभ्यन्तर शुचिः।।

संदर्भ सूची

1. वैदिक कोश, पृ. सं. 238।
2. यास्क निरूक्त, 2.24।
3. अथर्ववेद, 12.2.27।
4. वही, 3.13.1।
5. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ., 582।
6. वैदिक कोश, पृ., 174।
7. हिन्दू धर्मकोश, पृ., 299।
8. ऋग्वेद, 1.105.17।
9. महाभारत, 9.36.1।
10. वही, 9.36.53, 55।
11. वही, 9.37.20–26।
12. वही, 9.38.12–15।
13. वही, 9.38.20–21।
14. वही, 9.38.24–29।
15. वही, 9.38.30।
16. वही, 9.51.1–4।
17. वही, 9.54.11, 3.82.5।
18. वही, 9.39.4–34।
19. वही, 9.53.24।
20. वही, 9.53.22।
21. वही, 3.84.46।
22. वही, 6.9.33।
23. वही, 1.72.14।
24. वही, 3.88.2।
25. वही, 3.118.3।
26. वही, 1.169.20–21।
27. वही, 6.9.17।
28. वही, 2.31.7।
29. वही, 15.92.30।
30. वही, 13.108.9।
31. वही, 13.108.19।
32. वही, 13.108.20–21।